heartfulness
purity weaves destiny

श्रीमद्भगवद्गीता

के 7 रत्न

ध्यान करना सीखें

: heartfulness.org

heartfulness
purity weaves destiny

प्रजाहति यदा कामान्सर्वन्पार्थ मनोगतान।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्राज्ञस्तदोच्यते ॥

अध्याय 2, श्लोक 55, सांख्य योग

हे पार्थ,

जो मन से उत्पन्न सभी इच्छाओं को त्याग कर स्वयं के द्वारा, स्वयं में संतुष्ट है, जिसका अंतर्मन स्थिर है, उसे **स्थितप्रज्ञ** कहा जाता है।

heartfulness
purity weaves destiny

ध्यायतो विषयान्पुंसः
सङ्गस्तेषुपजायते।
सङ्गत्सञ्जायते कामः
कामात्क्रोधोऽभिजायते।

अध्याय 2, श्लोक 62, सांख्य योग

इन्द्रियों के सुखों का चिंतन
करते समय व्यक्ति उनकी
ओर आकर्षित होता है।

आकर्षण से इच्छा उत्पन्न होती है,
और **इच्छा से क्रोध** उत्पन्न होता है।

ध्यान करना सीखें

heartfulness
purity | weaves destiny

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

अध्याय 2, श्लोक 63, सांख्य योग

क्रोध से मन में भ्रम पैदा होता है, जिसके परिणामस्वरूप स्मृति की हानि होती है। जब स्मृति नष्ट हो जाती है, तो बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि का विनाश मनुष्य को विनाश की ओर ले जाता है।

ध्यान करना सीखें

heartfulness
purity | weaves destiny

रागद्वेषवियुक्तैस्तु
विषयानिन्द्रियश्चरण।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा
प्रसादमधिगच्छति॥

अध्याय 2, श्लोक 64, सांख्य योग

जो **मन को नियंत्रित** करता है और इन्द्रियों के विषयों का उपयोग करते हुए भी पसंद-नापसंद, राग और द्वेष से मुक्त रहता है, वह भगवान की कृपा प्राप्त करता है।

ध्यान करना सीखें

heartfulness
purity | weaves destiny

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चाक्तरस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिरशनान्तस्य कुतः सुखम् ॥

अध्याय 2, श्लोक 66, सांख्य योग

सद्भाव के बिना मनुष्य के लिए कोई ज्ञान नहीं है, और सद्भाव के बिना कोई चिंतन नहीं है। बिना चिंतन के शांति नहीं मिल सकती। **जिसके मन में शांति नहीं है, तो शांति के बिना उसे सुख कैसे मिल सकता है?**

ध्यान करना सीखें

heartfulness
purity | weaves destiny

श्रेयांस्वधर्मो विगुणः
परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः
परधर्मी सिद्धांतः ॥

अध्याय 3, श्लोक 35, सांख्य योग

किसी का **अपना कर्त्तव्य**, भले ही
योग्यता से रहित हो, दूसरे के अच्छे
से निभाए गए कर्त्तव्य से उत्तम है।
अपने कर्त्तव्य में जीवन-मरण ही उत्तम है,
दूसरे का कर्त्तव्य भय से भरा है।

ध्यान करना सीखें

heartfulness
purity | weaves destiny

न कर्मणामरंभन्नैष्कर्म्य पुरुषोऽश्नुते ।
न च संन्यासदेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥

अध्याय 3, श्लोक 4, कर्म योग

कर्म से विरक्त रहने से मनुष्य कर्म से मुक्ति नहीं पाता,
न ही वह **केवल त्याग से परम पूर्णता**
प्राप्त कर सकता है।

ध्यान करना सीखें